122 P
616
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1237/1991

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 616

82

1911

नौजवान ग्रन्थमाला का आठवाँ पुष्प

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
10 DEC. 1930

* वन्देमातरम *

महात्मा गान्धी की आन्धी

अथवा

राष्ट्रीय झँडा

616

संग्रहकर्ता—आर० एन० शर्म्मा।

प्रकाशक—अग्रवाल बुकडिपो खारीबावली देहली

द्वितीय बार] सन ३० [मूल्य -)

891.431
Sh23m
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 616
Date 15.12.71
GOVT. OF INDIA

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

नया

विलखती विधवा [नाटक]

आगरे में क्रान्ति

[जिसका पहिला एडीशन हाथों हाथ बिक गया ।]

एक अग्रवाल सेठ का छोटी उमर में अपने बेटे की शादी करना । शादी के चन्द दिन बाद लड़के का देहान्त हो जाना । उसकी विधवा स्त्री पर सास नन्द का अत्याचार । उसका अत्याचार सहते २ घर से निकलने का विचार करना । वह विचार सुसर को मालूम होना । सुसर का विधवा को ज़हर देने का विचार । ईश्वरी कोप से सुसर का खुद जहर पी लेना । बाद में सौतेली सास का उसको घर से निकाल देना, विधवा का पुरोहित के पास जाना और पुनर्विवाह के लिये प्रार्थना करना । पुरोहित का विरोध । इस पर विधवा का अदालत में जाना और एक देश भक्त की मारफत मेशन पर दावा । सनातन धर्मियों का घोर विरोध । अदालत में दोनों तरफ की बहसें । शास्त्रोक्त प्रमाण, विधवा का रोमांचकारी बयान, जूरियों की राय, अदालत का जजमेंट पढने लायक है ।

यह नाटक २०००० की जनता में "आनन्द-नाटक" की तरफ से आगरे में खेला जा चुका है और ग्वालियर महाराज ने भी अपने नाटक घर में अपने से प्रथम खिलाया था । पूरे हालात पढ़ियेगा । पृष्ठ संख्या २५० है । अन्दर अदालत का चित्र और तीन अन्य चित्र हैं । टाइटिल पर तिरंगा चित्र । मूल्य १॥) डाक खर्च अलग । चार पुस्तक मनीआर्डर से दाम भेजने पर ६) रु० में मिलेंगी ।

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

अग्रवाल बुकडिपो खारी बावली, देहली ।

॥ वन्देमातरम् ॥

महात्मा गांधी की आंधी
उर्फ़
राष्ट्रीय झंडा।

(१)

खुदाया मैहर की नज़रों से गर इरशाद तेरा ह ।
तो यह उजड़ा हुवा भारत अहा आजाद मेरा हो ॥
हज़ारों साल से बेदर्द लोगों के हवाले हैं ।
न यूं ग़ैरों के पंजे से वतन बरबाद मेरा हो ॥
खुशी रखता है दुनियां को सभी का अन्न दाता है ।
मगर अफसोस फिर भी यह चमन नाशाद मेरा हो ॥
तमन्ना है कि यह शैतानियत उठजाय दुनियां से ।
करूं कोशिश मिटाने की अगर इमदाद मेरा हो ॥
कटैं बेड़ी गुलामी की तेरी नज़रे इनायत से ।
यही फरयाद करता हूं वतन आज़ाद मेरा हो ॥
उठाते थे मुसीबत पर मुसीबत जिस तरह से हम ।
पड़ा पिंजरे में मेरी ही तरह सैयाद मेरा हो ॥

चर्खे की करामात ।

चरखा का छोटा तकुआ खोटा तू यार निकला ।
भाले की नोक तुझ से बेकार हो रही है ॥
अंग्रेजी मील सारे अब हाथ मल रहे हैं ।
रफ्तार तेरी उनको आज़ार हो रही है ॥
हैं पेचों ताब खाते तागे की ऐंठ से हैं ।
इमदाद तेरी हम को गमख़्वार हो रही है ॥
चक्कर को देख तेरे चक्कर में सब पड़े हैं ।
तादाद तेरी उनको अब बार हो रही है ॥
गाढे ने तेरे ऐसा गाढ़ा है रंग जमाया ।
मलमल के हाथ मलमल हो ख्वार सो रही है ॥
झन कार यह वही है जो चक्रपाणि में थी ।
भारत को द्रोपदी की दरकार हो रही है ॥
तेरे सबब से हम में उर होमरूल में अब ।
इक गुफ्तगू निराली त्रेतार हो रही है ॥
यह हिन्द इक किला था बरबाद होगया है ।
तेरी पनाह उसको मैमार हो रही है ॥
बुलबुल के इश्क का भी अन्दाज कबमिलेगा ।
सयाद तो शादी इकार हो रही है ॥

ओ सितमगर ।

चर्ख अब कर न सितम हम सताये बैठे हैं ।
खून का घूंट पिये गम उठाये बैठे हैं ॥
चोट देगी तुझे एक रोज़ ये आहें जल्लाद ।
ऐसे कितने न और दिल दुखाये बैठे हैं ॥

सर्म आती नहीं बेशर्म तुझे हँस हँस कर ।
कहता है हम भी तो मातम मनाये बैठे हुं ॥
सक्तियाँ तेरी फ़लक अब सहो जाती नहीं ।
ख्याल कर कब से यों गरदन झुकाये बैठे हैं ॥
ढेर बारूद का है गुस्सए मज़लूम बना ।
ज़ुल्म इक दिन तेरे आतिश छु आये बैठे हैं ॥
अश्क बहते हैं तो सब भेद खुला जाता है ।
दर्द दिल पहलू में अपने छिपायें बैठे हैं ॥
देखें दुनियाँ में हमारा भी कोई है कि नहीं ।
बस इसी खोज में धूनीं रमाये बैठे हैं ॥
देखोगे वही नज़ार कभी "वैनी माधव" ।
अपनी कुव्वत से ही गरदू हिलाये बैठे हैं ॥

गज़ल आज़ादी का पैगाम ३

आबरू पर मुल्क की हम सब फ़िदा हो जायंगे ।
कांग्रेस पर हर तरह से हम फ़िदा हो जायंगे ॥
हासिल आजादी करेंगे जिस तरह भी हो सके ।
देख लेना दास के नक़्शे कदम हो जायंगे ॥
क्यों हमें कमजोर समझे हो निहत्था जान कर ।
गर बिगड़ बैठे तो फिर हम इक बला हाजायंगे ॥
आग से मत खेलना हम हैं वो गोले आग के ।
गर भड़क उठे तो पागने कज़ा हो जायंगे ॥
अन्दलीबाने चमन लो फिर बहार आने को है ।
आगया है वक्त अब नाले रसां हो आयंगे ॥

माल की होगी ज़रूरत तो लुटा देंगे गौहर।
मुल्को मिल्लत के लिये हम सब गदा होजायंगे ॥
इक नये अन्दाज से किश्ती चलेगी मुल्क की।
और जवाहर लाल नेहरू नाखुदा हो जायंगे ॥

आने वाला वक्त है तो देख लेना दोस्तो।
आज जो आजिज़ हैं कल वह क्या से क्या होजायँगे ॥

इन गांधी टोपी वालों ने ४

इक लहर चला दी भारत में, इन गांधी टोपी वालों ने।
"स्वाधीन बनो" यह सिखा दिया इन गांधी टोपी वालों ने ॥
सदियों की गुलामी में फँस कर, अपने को भी जो भूल चुके।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
सर्व स्वदेश हित कर दो तुम, अपना सपूत हो माता के।
सर्वस्व त्याग का मन्त्र दिया, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
अनहित में भारत माता के, जो लगे देश द्रोही बन कर।
उन को सत-पथ पर चला दिया, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
पट बन्द हुये कितने मिल के, लंकाशायर भी चीख़ उठा।
चरखे सा चक्र चलाया जब, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
रोते हैं विदेशी व्यापारी, अपना सिर धुन बतलाते हैं।
खद्दर से प्रेम किया जब से, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
आदर्श जो हैं इस भारत के, दीनों के प्राण पियारे हैं।

नेता गांधी को बना लिया, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
"अब मेल करो आपस में तुम, जंजीर गुलामी की तोड़ो।
माना गांधी का कहना ये, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
है विकट समस्या तीस की भी, उसको भी हल कराना होगा।
जरिया बस एक निकाल लिया, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
युवकों के हृदय दुलारे हैं, आंखों के प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहर को राजा, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
खुश हुआ 'दग्ध' यह सुन करके स्वाधीन बनेगा भारत अब।
विश्वास दिलाया ऐसा ही, इन गांधी टोपी वालों ने ॥

भजन चरखा ९

चला दो चर्खा हर एक घर में, ये चर्ख तब तुम हिला सकोगे।
बंधा तभी सिलसिला सकोगे, उन्हें कबड्डी खिला सकोगे ॥
हमारे चरखे में ऐसा फन है, जो आजकल की मशीनगन है।
वो मानचेस्टर वो लंकाशायर, का जीत इस से किला सकोगे ॥
रुई न भारत की हो रवाना, बुने स्वदेशी का ताना बाना।
इसी तरह से विदेशी बणिज को, आप फांसी दिला सकोगे ॥
न पट विदेशी का लो सहारा, शरीर चाहे रहे उघारा।
बचे बहत्तर करोड़ रुपया, तब आप बच्चे जिला सकोगे ॥
मिला लो भाई गले लगा के, स्वदेशी का तुम सबक पढ़ा के।
विदेशी चीजों को दो हटा के, फिर चैन बंशी बजा सकोगे ॥

रसिया

प्रीतम चलूं तुम्हारे संग, जंग में पकडूंगी तलवार।
गाढ़े के सब वस्त्र बनाओ, सारी पब्लिक को पहनाओ॥
और मैं करूं सूत तय्यार, ॥ जंग में॥
ऊंच नीच सबको बतलाओ, गांधी का पैगाम सुनाओ॥
मैं भी करूं नमक तैयार ॥ जंग में॥
जेल तोप से नहीं डरूंगी, बिना काल के नहीं मरूंगी॥
गोली खाने को तैयार. ॥ जँग में॥
भारत को आजाद करूंगीं. दुश्मन को बरबाद करूंगी॥
कुछ मत सोच करो भरतार ॥ जँग॥
असहयोग की फौज सजाओ, कांग्रेस की तोप लगाओ॥
दुश्मन भगे समन्द्र पार ॥ ज०॥
गान्धी जी बन रहे कलन्दर, शशोपन्ज में पड़ गये बानर॥
देखो कहा करे करतार ॥ जग में॥
अब गान्धी ने कदम बढाया, सब का दिल दहलाया॥
देबी हो रही है तैयार ॥ ज०॥
आजादी की छिडी जँग अब, बनो सरोजनी सत्यव्रती सब
बहनो हो जावो हुशियार ॥ ज०॥
येह रसिया गा २ के सुनावे, जौश जननों को भी आवे॥
वर्मा जी तैयार ॥ जँग में॥

शराब का बाई काट

खाना खराब कर दिया बिलकुल शराब ने ।
जो कुछ कि न देखा था दिखाया शराब ने ॥
बुलबुल की तरह बाग़ में लेते थे बुए गुल ।
सन्डास नालियों में गिराया शराब ने
हम पीने वाले सरवतें सन्डल थे दोस्तों ।
कुत्तों का मूत हमको पिलाया शराब ने ॥
मैदान ए जङ्ग में थे कभी हम भी सहस बाहू ।
कीचड़ की नालियों में गिराया शराब ने ॥
पी कर के दूध घी रहते थे हम आजाद ।
जब से पी शराब हम खो चुके स्वराज्य ॥

मेरे प्यारो हमें अब ले चलो तुम जेलखाने को ।
तड़पते मुद्दतों से हैं वहां कम्मल बिछाने को ॥
पन्हादो हथकड़ी बेड़ी जरा जन्जीर भी कसदो ।
मगर मुह भर खुला रखना स्वदेशी गीत गाने को ॥
मून्ज बटकर बता देंगे वहीं चक्की चला देंगे ।
सभी तय्यार बैठे हैं वहीं कोल्हू घुमाने को ॥
फड़कते हाथ रहते हैं सभी के आज भारत में ।
बगीचों और बंगलों में सदा गैंती चलाने को ॥
नहीं भरता है अब साग पूरी वो मिठाई से ।
ललच ते हैं तुम्हारे अधभुने दाने चबाने को ।

जेलखाने की भी खुश होके बढ़ायें रौनक।
एक क्या लाखों बना जायंगे मरते मरते॥
मातृ-भूमि के लिए जान निछावर कर दें।
सबक भारत को पढ़ा जायंगे मरते मरते॥
हैं तो नाचीज मगर इतनी जुरत रखते हैं।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायंगे मरते मरते॥
दत्त, भगत, दयानन्द, तिलक, गांधी का।
सबको फरमान सुना जायंगे मरते मरते॥

शहीदों के खूं का असर ९

शहीदों के खूं का असर देख लेना।
मिटायेंगे जालिमका घर देख लेना॥
किसी के इशारे के हम मुन्तजिर हैं।
बहा देंगे खूं की नहर देख लेना
झुकादेंगे गरदन को हम जेर खजर।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना॥
जो खुदगर्ज गोली चलाते हैं हमपर।
तो कदमोंमें उनकाही सर देख लेना॥
जो नकश हमने खींचाहै खूनेजिगर से।
वह होगा कभी बारवर देख लेना॥
किनारे पे आये भंवरसे वह किश्ती।
वह आयेगी एकदिन लहर देखलेना॥
बलायें ये जायेंगी खुद सर निगूं हो।
नहीं होगी इनकी गुजर देख लेना॥
खुजद ही हुआ हिन्द आज़ाद अपना।
छपेगी ये एक दिन खबर देख लेना॥

फांसी के तख्ते पर देशभक्तों के मनोभाव १०

कहते हैं अलविदा अब हम इस जहान को।
जाकर खुदा के घर फिर आया न जायेगा॥
अहले वतन अगरचे हमें भूल जायेंगे।
अहले वतन को हमसे भुलाया न जायगा॥
जुल्मो सितम से तंग न आयेंगे हम कभी।
हम से सर नियाज़ झुकाया न जायगा॥
इससे ज्यादा और सितम क्या करेंगे वह।
इससे ज्यादा उन से सताया न जायगा॥
हम ज़िन्दगी से रूठ कर बैठे हैं जेल में।
अब ज़िन्दगी से हम को मनाया न जायगा॥
यह सच है मौत हमको मिटा देगी दुहेर से।
लेकिन हमारा नाम मिटाया न जायगा॥
हमने लगाई आग है जो इन्कलाब की।
इस आग को किसी से बुझाया न जायेगा॥
यारो है अब भी वक्त हमें देख भाल लो।
फिर कुछ पता हमारा लगाया न जायेगा॥
आज़ाद हम कर न सके अपने मुल्क को।
खंजर यह मुँह खुदा को दिखाया न जायगा॥

शहीद गर्जना ११

(ले०— काकोरी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल)

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना
आज़ाद होगा होगा आता है वह ज़माना॥

खूं खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना॥
क़ौमी तिरंगे झण्डे पर जां निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुसलिम गाते हैं यह तराना॥
अब भेड़ बकरी बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
परवाह अब किसे है जेलओ दमनकी प्यारो।
इक खेल हो रहा है फांसी पै झूल जाना॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना॥

राष्ट्रपति जवाहरलाल नं० १२

भारत का डंका आलम में बजवाया वीर जवाहर ने।
स्वाधीन बनो, स्वाधीन बनो, समझाया वीर जवाहर ने॥१॥
यह लाल जो मोतीलाल का है लाल दुलारा भारत का।
सोते भारत को हट करके, जगवाया वीर जवाहर ने॥२॥
अंगरेजों की मृगतृष्णा में, लटके थे सब भारतवासी।
पूरा आज़ादी का मंतर, सिखलायाँ वीर जवाहर ने॥३॥
दे दे स्पीचें ज़िन्दादिल, कमजोरी दूर भगा दी सब।
रग-रग में खूं आजादी का, दौड़ाया वीर जवाहर ने॥४॥
खोटी है राजनीत उसने, छानी है खाक विदेशों की।
समता स्वतन्त्रता का मारग, दिखलाया वीर जवाहर ने॥५॥
पूंजीपति जमींदार करते हैं, जुल्म मजूर किसानो पर।
बन साथी दीनों का धीरज, धरवाया वीर जवाहर ने॥६॥

हिंदू मुसलिम सिख जैन ईसाई पारसी भाई-भाई हैं।
सब ऊँच-नीच का विषमभेद, मिटवाया वीर जवाहर ने ॥७॥
इक रोशन आग धधकत है, आज़ादी की उसके दिल में।
जिसे युवकों का मुर्दा दिल, चमकाया वीर जवाहर ने ॥८॥
नवयुवक करोड़ों भारत के, भूले थे भोग विलासों में।
युवकोंकी शक्ति को इकदम, उकसाया वीर जवाहर ने ॥९॥
आदर्श-चरित से वह अपने, युवकों का सम्राट बना।
आजादी का ऊँचा झण्डा, लहराया वीर जवाहर ने ॥१०॥
बिजली है वाणी में जिसकी, जादू है आंखों में उसकी।
देखा जिसको एकपल भरमें, अपनाया वीर जवाहर ने॥११॥
गांधी जब आशिष दे बोले "खुद झुक के बनूंगा मैं तेरा।
तब सेहरा राष्ट्रपति का सिर, बंधवाया वीर जवाहर ने॥१२॥
लश्कर "प्रकाश" यह भारतका, अचरज से डूबी है दुनिया।
कांग्रेस को करके मुट्ठी में मुसकाया वीर जवाहर ने ॥१३॥

वीरप्रतिज्ञा नं० १३

कसली कमर अबतो कुछ कर के दिखायेंगे।
आजाद ही हो लेंगे या सर ही कटा देंगे॥
हटने के नहीं पीछे डर कर कभी जुल्मों से।
तुम हाथ उठाओगे हम पैर बढ़ा देंगे॥
बेशस्त्र नहीं हैं हम बल है हमें चरखे का।
चरखे से जमीन को हम यों चर्ख गुंजा देंगे॥
परवा नहीं कुछ दम की ग़म नहीं मातम की।
है जान हथेली पर एक दम में गवां देंगे॥

उफ तक भी जुंबां से हरगिज न निकालेंगे।
तलवार उठाओ तुम हम सर को झुका देंगे॥
सीखा है नया हमने लडने का यह तरीका।
चलवाओ गन मशीनें हम सीना अड़ा देंगे॥
दिलवाओ हमें फांसी ऐलान दे कहते हैं।
खूँ से ही शहीदों के हम फौज बना देंगे॥
मुसाफिर जो 'अंडमन' के तूने बनाये जालिम।
आज़ाद ही होने पर हम उनको बुला लेंगे॥

सर फरोशी की तमन्ना १४

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है अब जोर कितना बाजुवे क़ातिल में है॥
रह बरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज्जते सहरान वर्दी दूर यह मंजिल में है॥
वख्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां।
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मकतल में कातिल कह रहा है बार २
क्या तमन्नायें शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा गैरकी महफिल में है॥
अब न अगले बलबले हैं और न अरमानोंकी भीड़।
सिर्फ मिटजानेकी हसरत अबदिले बिस्मिल में है॥

वीर गर्जना नं० १५

भारत के शेर जागो बदला है अब जमाना ।
प्यारे वतन को इस दम आजाद है बनाना ॥
मत बुजदिलीको हरगिज तुम पासदो फटकने ।
आखिर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ॥
स्वतन्त्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक ।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना ॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना ॥

यदि आप बेरोज़गार हैं

तो

निराश न हों

यदि आप बेरोजगार हैं और स्वतन्त्रता से जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो आप हमारे यहां के १६ सफे के ट्रैक्ट क्यों न मँगा कर बेचते हो। १६ सफे के ट्रैक्ट १।) सैकड़ा व १५) हज़ार थोक व्यापारियों को भेजे जाते हैं। बिना बिकी पुस्तकें वापिस कर लेते हैं व्योपारियों की मांग व लाभ का विशेष ध्यान रक्खा जाता है। इस के अलावा बम्बई, मथुरा, हाथरस बनारस, लाहौर आदि का थोक माल बिक्री के लिये तैयार रहता है।

१. राष्ट्रीय झण्डा	-)	झांसी की रानी	-)
२. आज़ादी का बिगुल	-)	शारदा बिल	-)
३. क्रान्ति की लहर	-)	गांधी की तोप	-)
४. नमक का इतिहास	-)	लल्लू का चाचा	-)
५. सत्याग्रह की तोप	-)	नकली साधू	-)
६. शहीदों की याद	-)	बिलखती विधवा	-)
७. सुदर्शन चक्र	-)	विधवा दुख दर्शन	≡)
		कांग्रेस के महापुरुष	१॥)

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता:—

अग्रवाल बुकडिपो खारी बावली

देहली।

नारायणदास गुप्त के प्रबन्ध से द्वादश श्रेणी प्रेस, देहली में छपी;